RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

RIICO missiongyan

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-10वीं राजस्थान बोर्ड 2027

ARJUN BATCH

सामाजिक विज्ञान

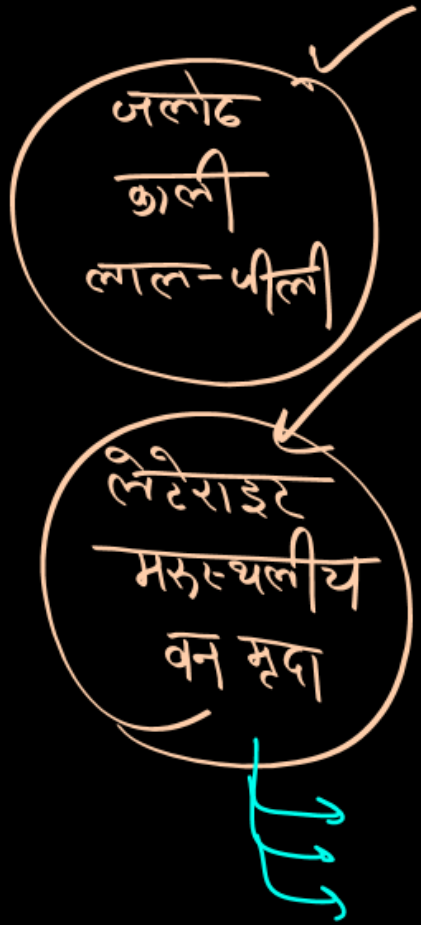
संसाधन एवं विकास

Resources and Development



CHAPTER -01 | PART-08

एकदम बेसिक से थ्योरी क्लास!



आज क्या पढेंगे ?

1. मृदाओं का वर्गीकरण
2. मृदा अपरदन और संरक्षण
3. भारत - मानचित्र



4 लेटराइट मृदा

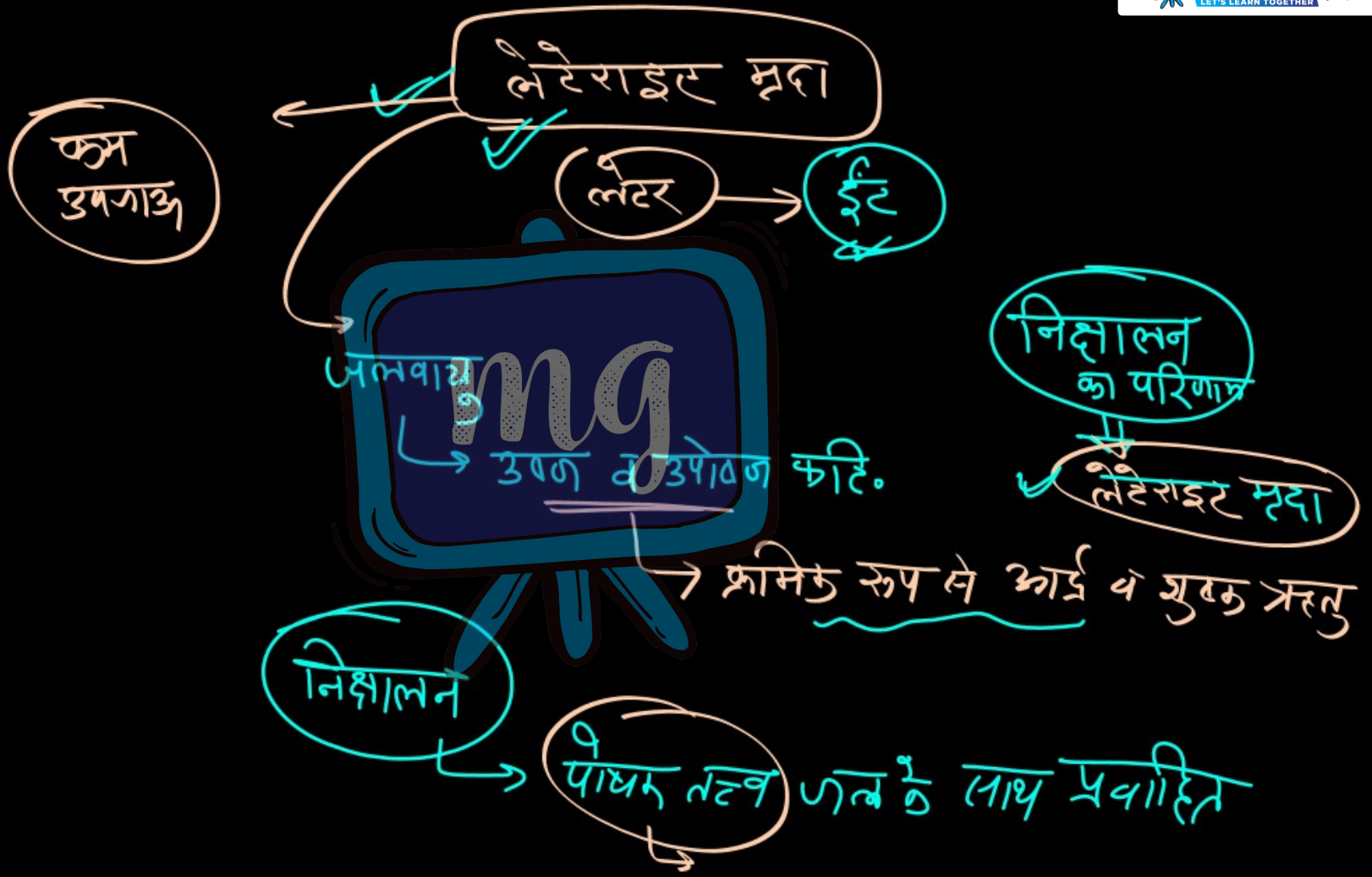
लेटराइट शब्द : ग्रीक भाषा के शब्द "लेटर (Later)" से लिया गया है (अर्थ : ईंट)

निर्माण : उष्ण कटिबंधीय तथा उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु क्षेत्रों में (आर्द्र तथा शुष्क ऋतुओं के एक के बाद एक आने के कारण)

- (भारी वर्षा → अत्यधिक निक्षालन (leaching)
- अधिकतर गहरी तथा अम्लीय (pH<6.0) होती है।
- सामान्यतः पौधों के पोषक तत्वों की कमी होती है।

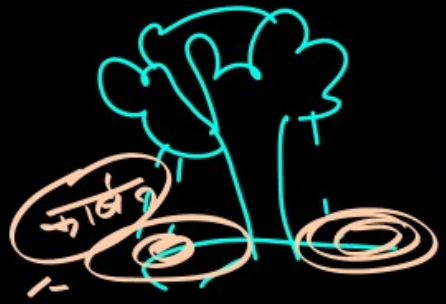
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



पर्णपाती व सदाबहार वन

→ ह्यूमस उपस्थित

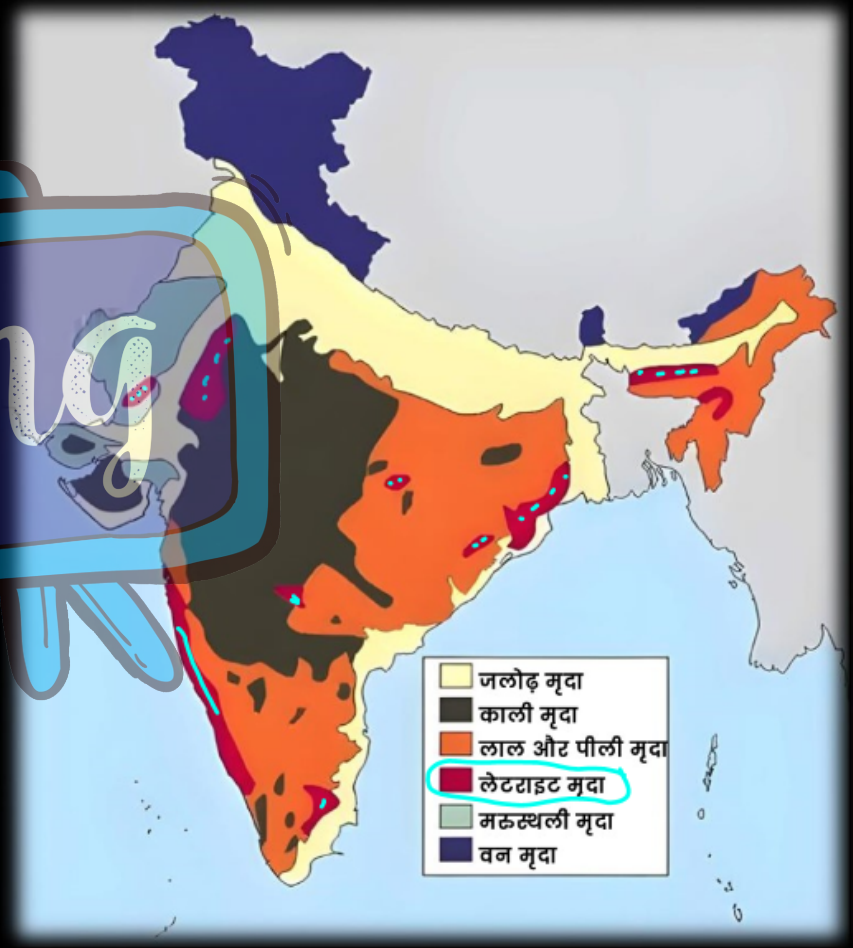
→ कार्बनिक तत्व

शुष्क व अर्द्ध शुष्क वन

→ ह्यूमस की कमी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- अधिकतर दक्षिणी राज्यों, महाराष्ट्र के पश्चिमी-घाट क्षेत्रों, ओडिशा, पश्चिम बंगाल के कुछ भागों तथा उत्तर-पूर्वी प्रदेशों में पाई जाती है।
- जहाँ पर्णपाती और सदाबहार वन मिलते हैं, वहाँ इसमें ह्यूमस पर्याप्त रूप में लेकिन, विरल वनस्पति और अर्ध शुष्क पर्यावरण में इसमें ह्यूमस की मात्रा कम मृदा-संरक्षण की उचित तकनीक अपना कर इन मृदा पर कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु में चाय और कॉफी उगाई जाती हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु की लाल-लेटराइट मृदा काजू की फसल के लिए अधिक उपयुक्त हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Hw.

Q.① लेटेराइट के कौनसे क्षेत्रों में चाय-कॉफी की कृषि की जाती है? तथा कौनसे क्षेत्रों में काजू की कृषि की जाती है?

Ans. चाय-कॉफी → तमिलनाडु - कर्नाटक - केरल



काजू → आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु - केरल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5 मरुस्थली मृदा

- रंग : लाल और भूरा
- आम तौर पर रेतीली और लवणीय
- कुछ क्षेत्रों में नमक की मात्रा इतनी अधिक है कि झीलों से जल वाष्पीकृत करके खाने का नमक भी बनाया जाता है।
- शुष्क जलवायु और उच्च तापमान के कारण जलवाष्पन दर अधिक है और मृदाओं में ह्यूमस और नमी की मात्रा कम होती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

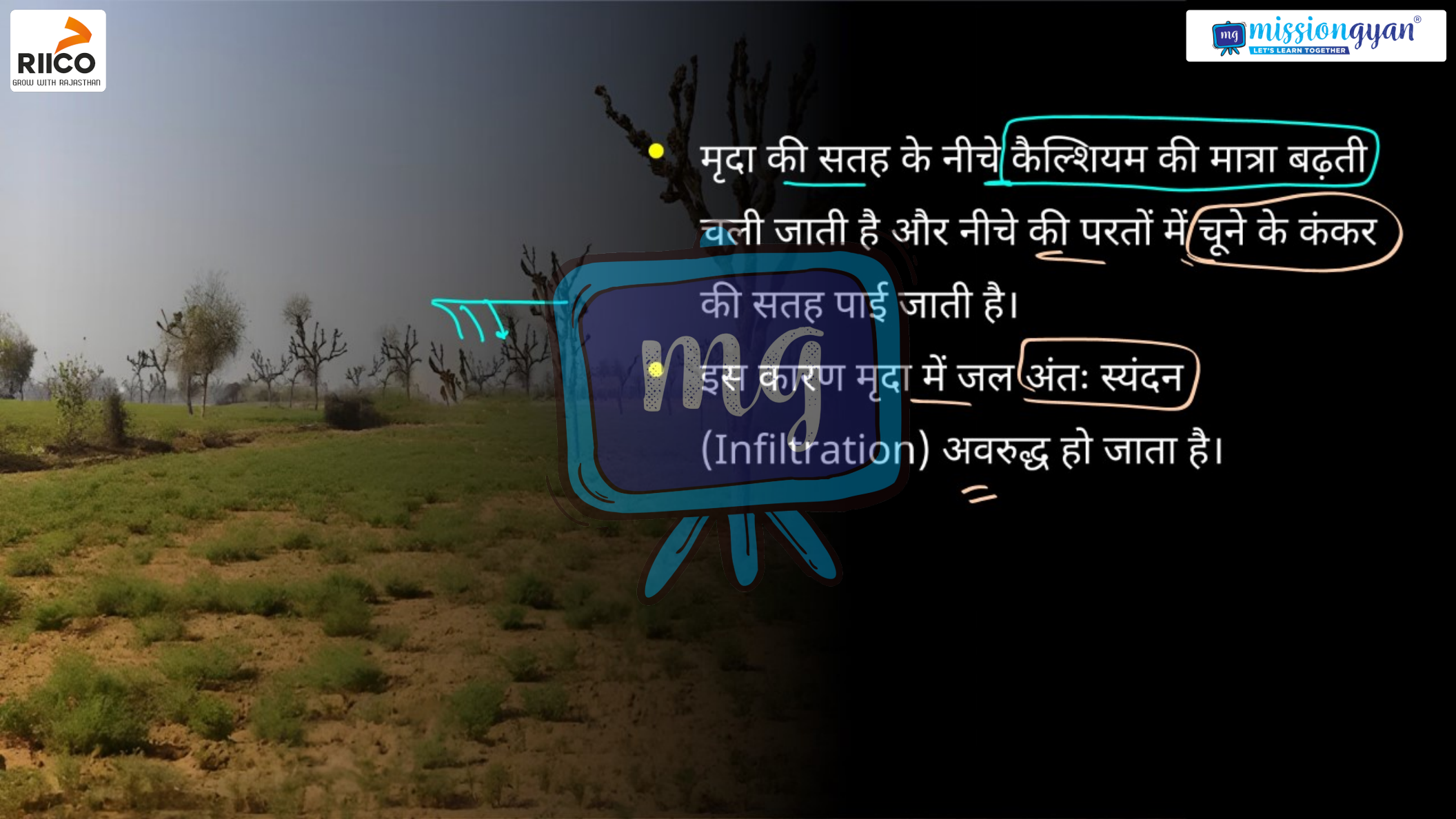
mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- 61.11
- पश्चिमी राज.
- थार मरु.
- गर्म/उष्ण मरु.
- → ह्यूमस की कमी
- → जल वाष्पोत्सर्जन अधिक
- → ताप → उच्च तापमान
- → शुष्कता / नमी की कमी
- → लाल व भूरे रंग
- मरुस्थलीय मृदा / शुष्क → मोटे कण
- रेतीली व लवणीय
- मरुस्थलीय मृदा
- निचली परत → चूने के कंकर
- आन्तः स्यंदन अवक्षेप
- खारे पानी की झीलें
- सांभर
- पचपदरा
- कुचामन
- डीडवाना
- वाष्पोत्सर्जन → नमक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- मृदा की सतह के नीचे कैल्शियम की मात्रा बढ़ती चली जाती है और नीचे की परतों में चूने के कंकर की सतह पाई जाती है।
- इस कारण मृदा में जल अंतः स्यंदन (Infiltration) अवरुद्ध हो जाता है।

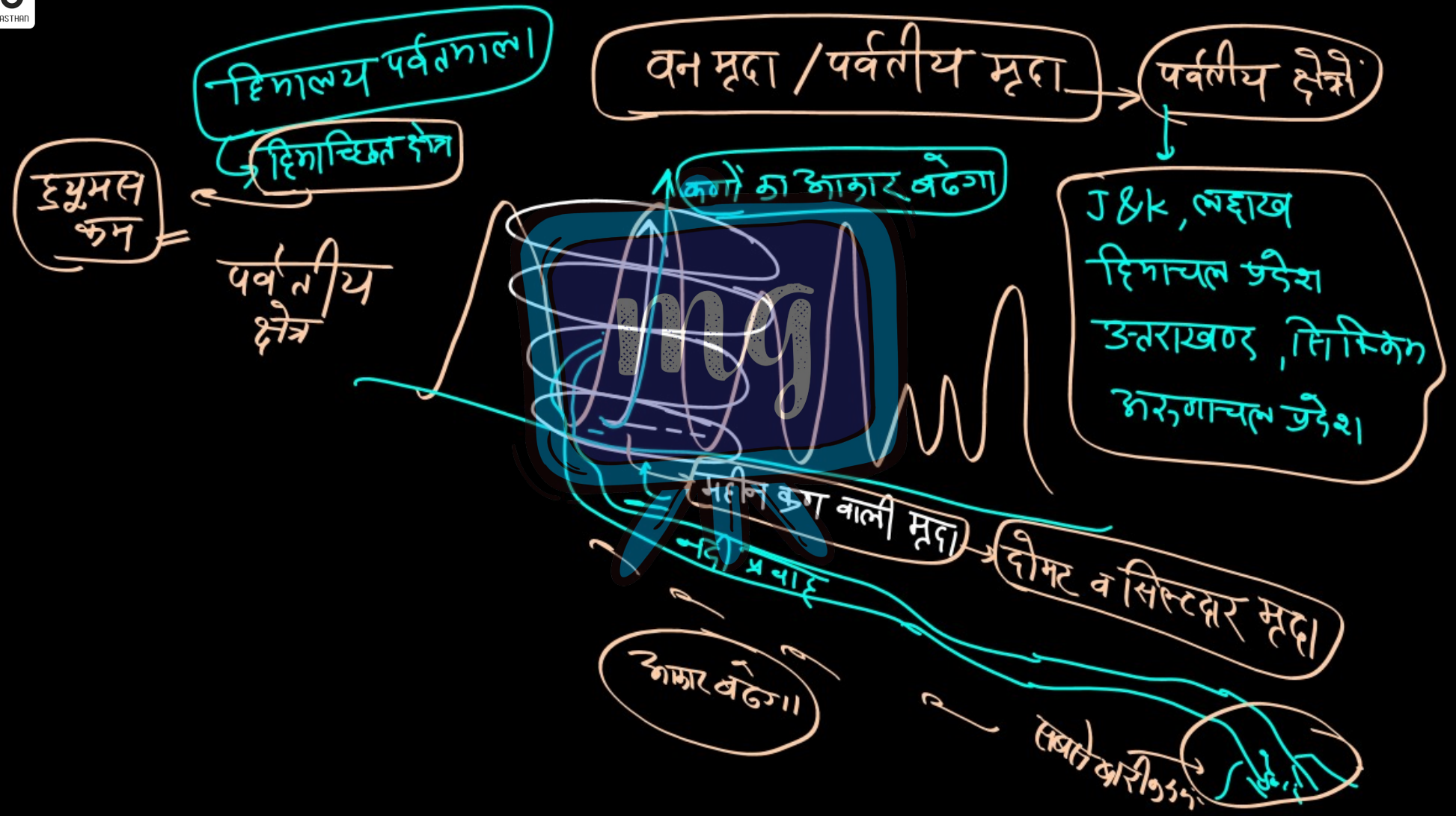
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



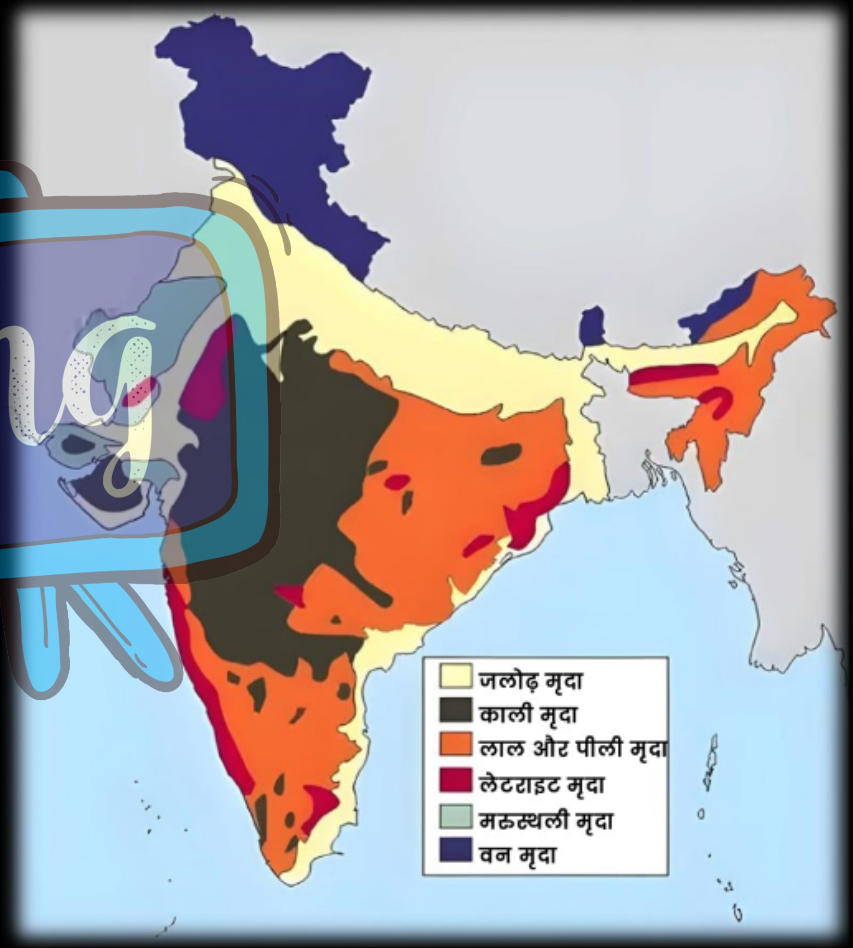


6 वन मृदा

- आमतौर पर पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ पर्याप्त वन उपलब्ध हैं।
- इनमें पर्वतीय पर्यावरण के अनुसार बदलाव आता है।
- नदी-घाटियों में ये मृदाएँ दोमट और सिल्टदार होती है। परंतु ऊपरी ढालों पर इनका गठन मोटे कणों का होता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



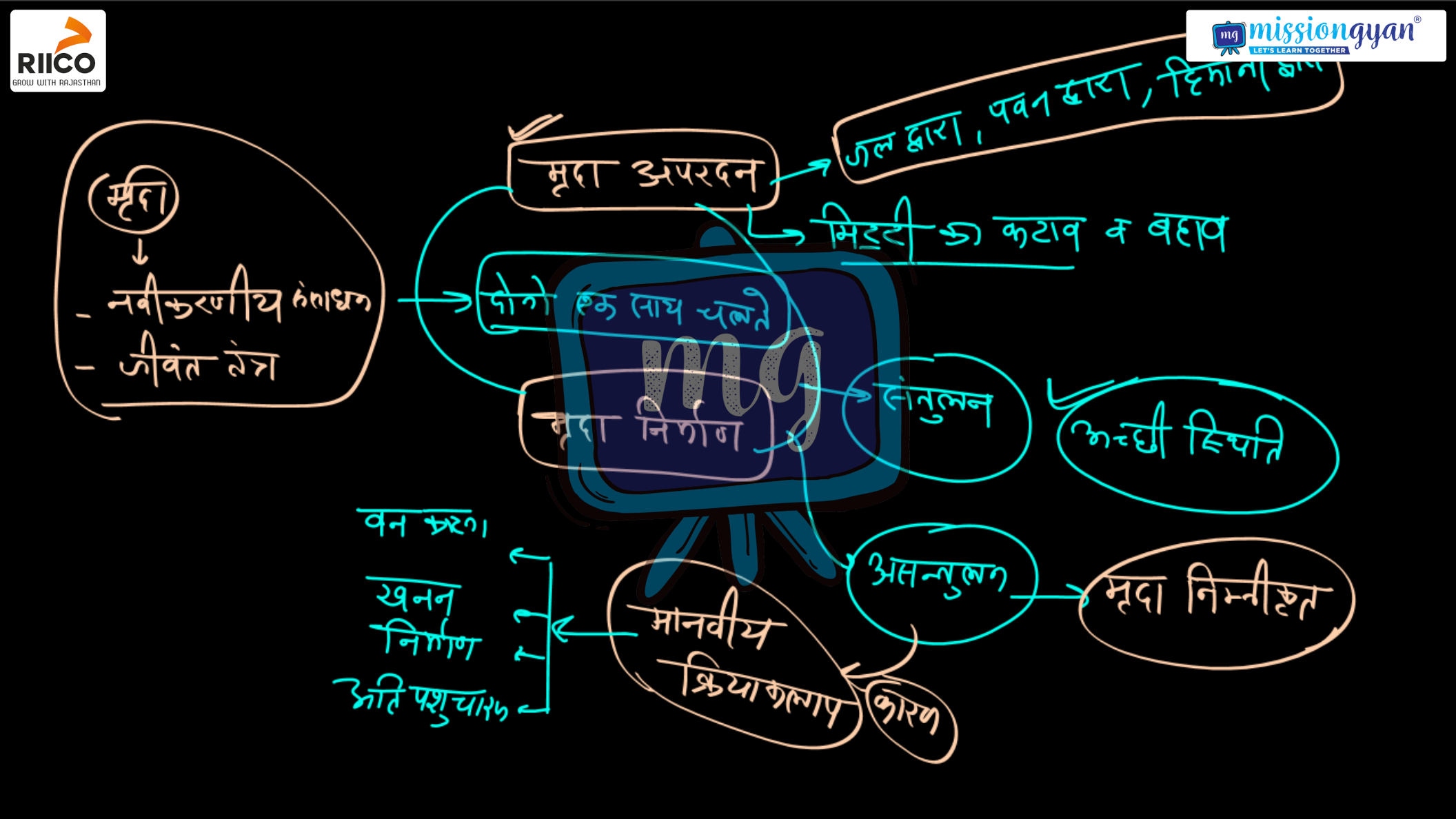
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



मृदा अपरदन और संरक्षण

- मृदा अपरदन : मृदा का कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया मृदा के बनने और अपरदन की क्रियाएँ आमतौर पर साथ-साथ चलती है और दोनों में संतुलन होता है।
- परंतु मानवीय क्रियाओं (वनोन्मूलन, अति पशुचारण, निर्माण, खनन आदि) से कई बार यह संतुलन भंग हो जाता है तथा पवन, जल और हिमनदी मृदा- अपरदन करते हैं।

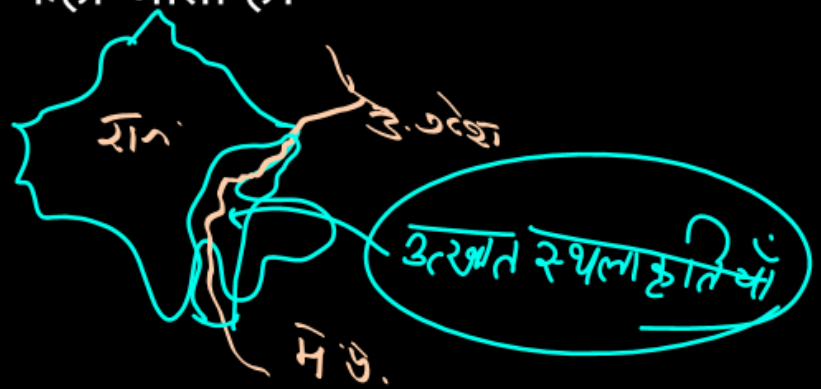

मृदा
नवीकरणीय संसाधन
जीवंत तंत्र
मृदा अपरदन
जल द्वारा, पवन द्वारा, दिखाना बाकी
मिट्टी का कटाव व बहाव
दोनों एक साथ चलते
मृदा निर्माण
संतुलन
अच्छी स्थिति
असन्तुलन
मृदा निम्नीकृत
मानवीय क्रियाकलाप
कारण
वन क्षरण
खनन
निर्माण
अति पशुचारण

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अवनलिकाएँ : बहता जल, मृदा को काटते हुए गहरी वाहिकाएँ बनाता है

- ऐसी भूमि जोतने योग्य नहीं रहती → उत्खात भूमि (Bad Land) कहते हैं।
- चंबल-बेसिन में ऐसी भूमि को खड्ड-भूमि (Ravine) कहा जाता है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



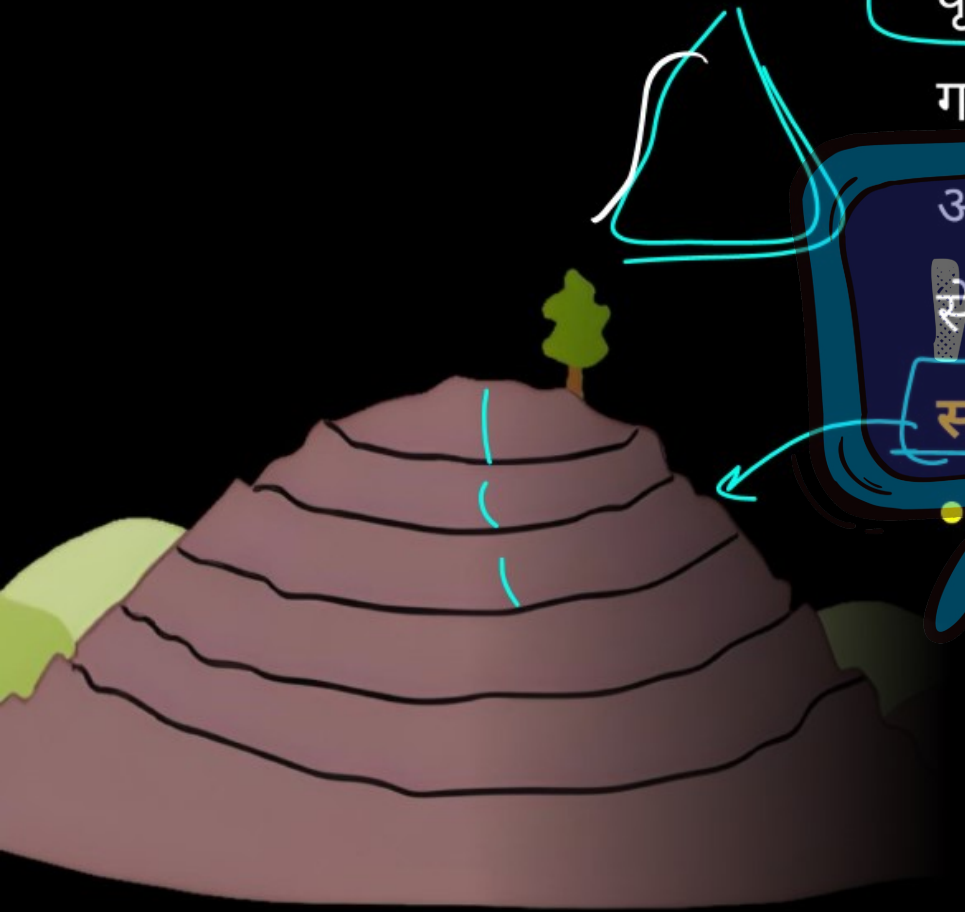


- चादर अपरदन (Sheet Erosion) : कई बार जल, चादर के रूप में ढाल के साथ नीचे की ओर बहता है। ऐसी स्थिति में ऊपरी मृदा घुलकर जल के साथ बह जाती है।
- पवन अपरदन (Wind Erosion) : पवन द्वारा मैदान अथवा ढालू क्षेत्र से मृदा को उड़ा ले जाने की प्रक्रिया।

मरुस्थल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



कृषि के गलत तरीकों से भी मृदा अपरदन होता है। गलत ढंग से हल चलाने जैसे ढाल पर ऊपर से नीचे की ओर हल चलाने से वाहिकाएँ बन जाती हैं, जिसके अंदर से बहता पानी आसानी से मृदा का कटाव करता है।

समोच्च जुताई (Contour Ploughing)

- ढाल वाली भूमि पर समोच्च रेखाओं के समानांतर हल चलाने से ढाल के साथ जल बहाव की गति घटती है।

सोपान/सीढ़ीदार कृषि (Terrace Farming)

- ढाल वाली भूमि पर सोपान → कृषि-अपरदन का नियंत्रित (पश्चिमी और मध्य हिमालय)



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पवन अपरदन को नियन्त्रित

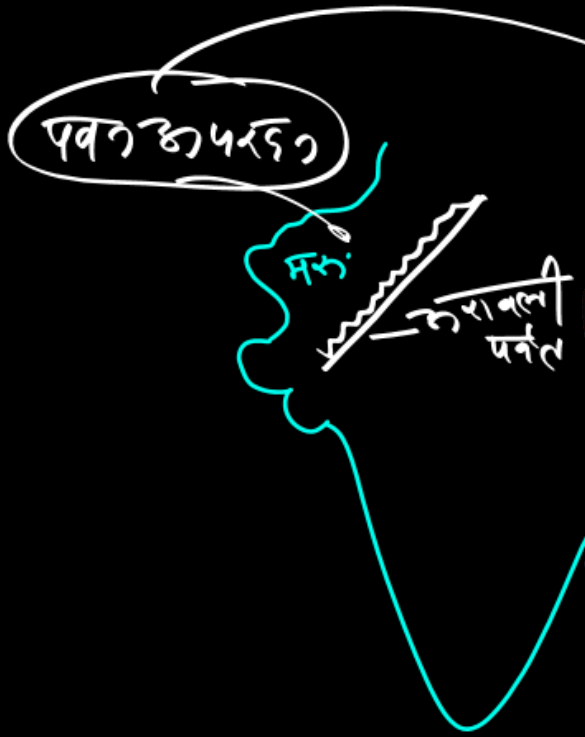
पट्टी कृषि (Strip Farming)

- बड़े खेतों को पट्टियों में बाँटा जाता है।
- फसलों के बीच में घास की पट्टियाँ उगाई जाती हैं।
- ये पवनों द्वारा जनित बल को कमजोर करती हैं।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



रक्षक मेखला(Shelter Belt)

- पेड़ों को कतारों में लगाकर पवनों की गति कम करना (पश्चिम भारत में रेत के टीलों के स्थायीकरण)



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

① संसाधन → परिभाषा
→ वर्गीकरण
→ विकास

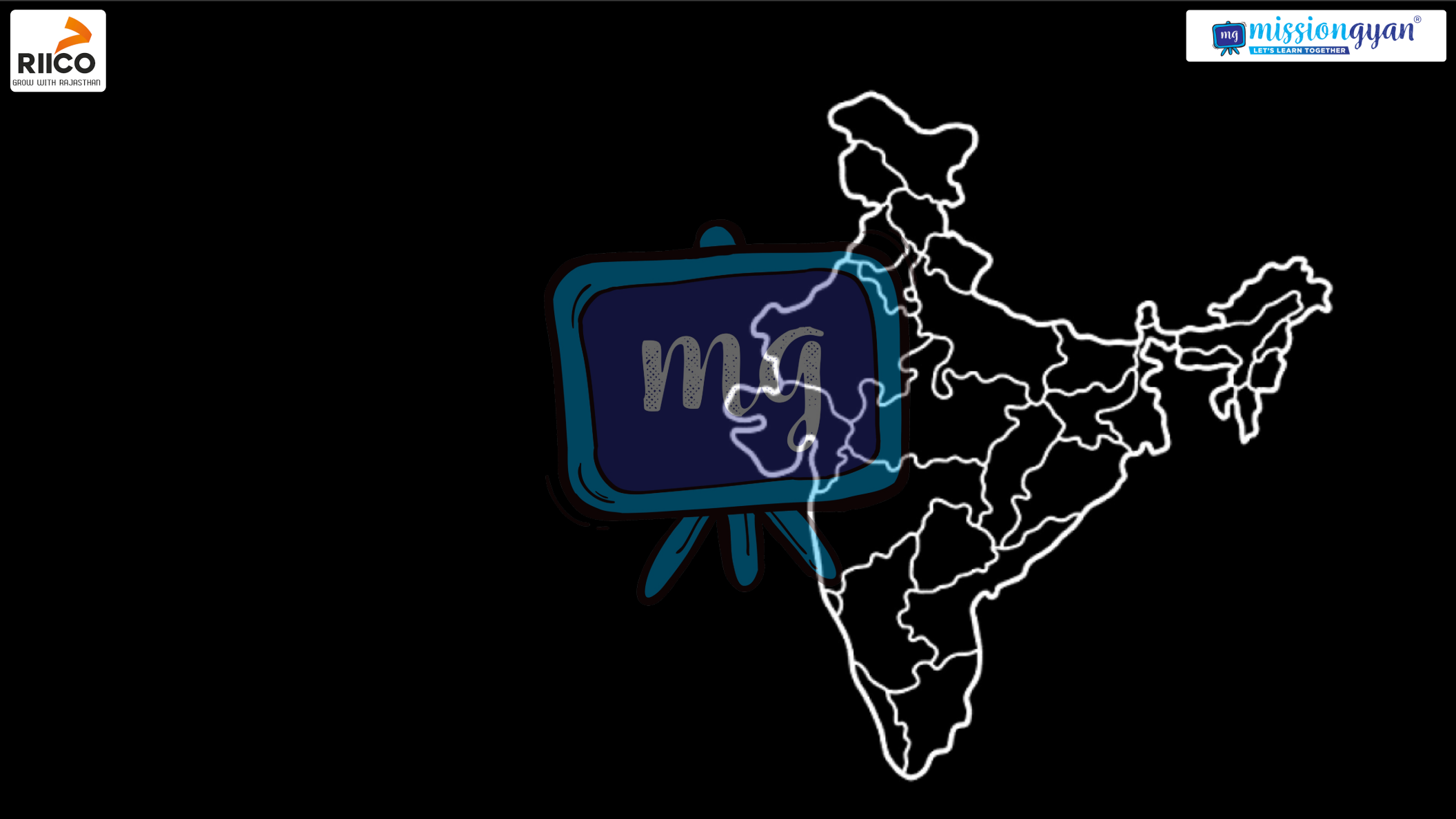
② संसाधन नियोजन व सतत् पोषणीय विकास
→ एजेण्डा 21
→ रियो सम्मेलन
(पृथ्वी सम्मेलन)

③ भारत में संसाधन नियोजन

④ संसाधन संरक्षण
→ गाँधीजी
→ क्लब ऑफ रोम
→ शुमेशर (स्मॉल इज ब्यूटी - फुल)
→ बुरुटलैण्ड आयोग

⑤ भूमि संसाधन

⑥ मृदा संसाधन


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
mg